1961F Seth Lakhmi Chandra (of Bamrana)

On the occasion of the 75th Anniversary of Mahaveer Pathshala, Sadumar

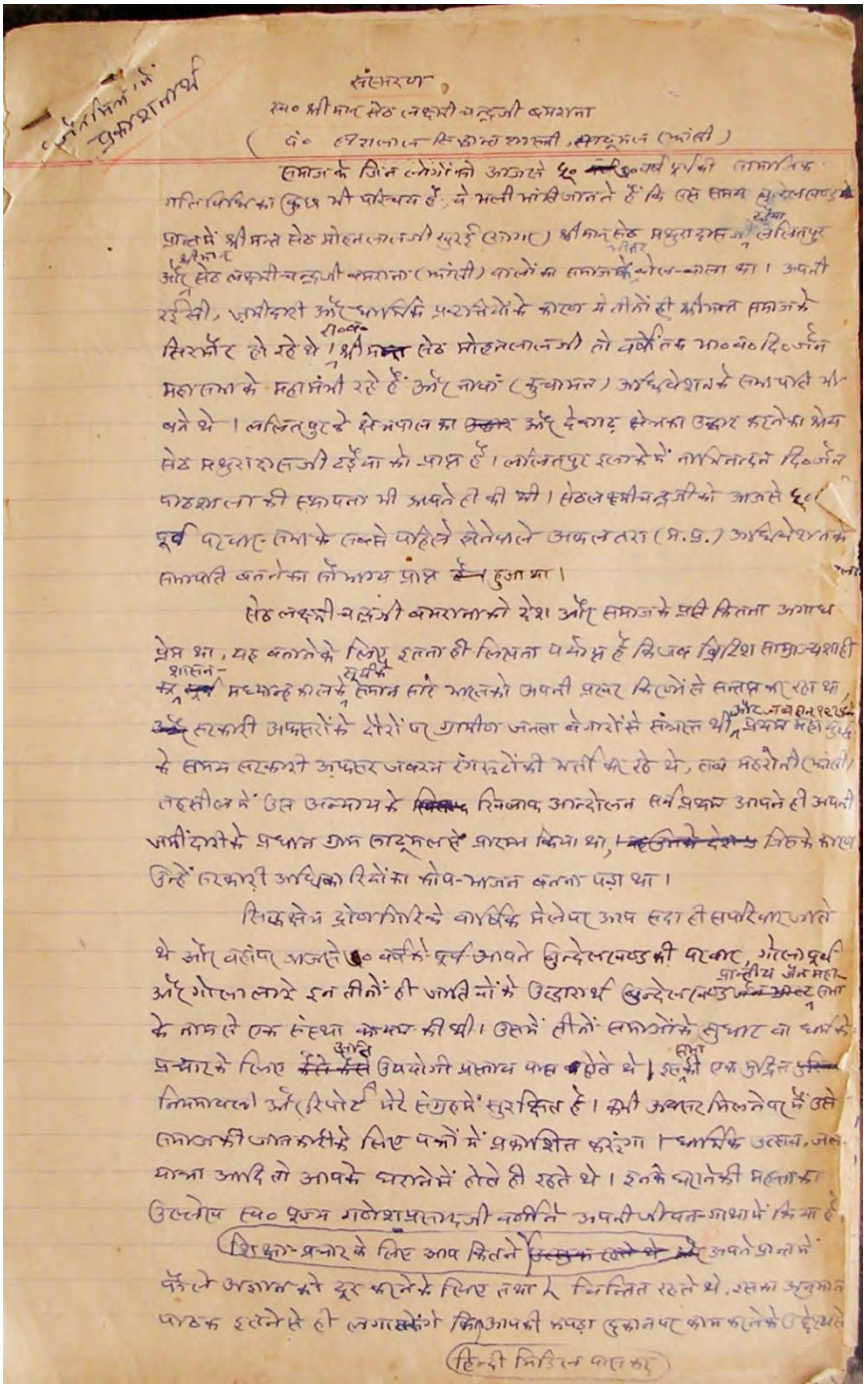

जैनमित्र में प्रकाशनार्थ

संस्मरण

स्व० श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी बमराना

(पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, साढूमल (झांसी))

समाज के जिन लोगों को आज से ६० वर्ष पूर्व की सामाजिक गतिविधि का कुछ भी परिचय है, वे भली भांति जानते हैं कि उस समय बुन्देलखण्ड प्रान्त में श्रीमन्त सेठ मोहनलालजी खुरई (सागर) श्रीमन्त सेठ मथुरादासजी टडैया ललितपुर और श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी बमराना (झांसी) वालों का समाज के भीतर बोल-बाला था। अपनी रईसी, जमींदारी और धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण ये तीनों ही श्रीमन्त समाज के सिरमौर हो रहे थे। राजा सेठ मोहनलालजी तो वर्षों तक भा०व०दि० जैन महासभा के महामंत्री रहे हैं और नावां (कुचामन) अधिवेशन के सभापति भी बने थे। ललितपुर के क्षेत्रपाल का और देवगढ़ क्षेत्र का उद्धार करने का श्रेय सेठ मथुरादासजी टडैया को प्राप्त है। ललितपुर इलाके में नाभिनन्दन दि० जैन पाठशाला की स्थापना भी आपने ही की थी। सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी को आज से ६० वर्ष पूर्व परवार सभा के सबसे पहिले होने वाले अजनतरा (म.प्र.) अधिवेशन के सभापति बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी बमराना को देश और समाज के प्रति कितना अगाध प्रेम था, यह बताने के लिए इतना ही लिखना पर्याप्त है कि जब ब्रिटिश साम्राज्यशाही शासन-सूर्य मध्याह्न काल के समान सारे भारत को अपनी प्रखर किरणों से सन्तप्त कर रहा था, सरकारी अफसरों के दौरों पर ग्रामीण जनता बेगारों से संत्रस्त थी, और जब सन् १९१४ में प्रथम महायुद्ध के समय सरकारी अफसर जबरन रंगरूटों की भर्ती कर रहे थे, तब महरौनी (झांसी) तहसील में उस अन्याय के खिलाफ आन्दोलन सर्वप्रथम आपने ही अपनी जमींदारी के प्रधान ग्राम साढूमल से प्रारम्भ किया था, जिसके कारण उन्हें सरकारी अधिकारियों का कोप-भाजन बनना पड़ा था।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के वार्षिक मेले पर आप सदा ही सपरिवार जाते थे और वहीं पर आज से ६० वर्ष पूर्व आपने बुन्देलखण्ड की परवार, गोलापूर्व और गोलालारे इन तीनों ही जातियों के उद्धारार्थ बुन्देलखण्ड प्रान्तीय जैन महासभा के नाम से एक संस्था की थी। उसमें तीनों समाजों के सुधार व धर्म के प्रचार के लिए अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास होते थे। इसकी एक मुद्रित नियमावली और रिपोर्ट मेरे संग्रह में सुरक्षित है। कभी अवसर मिलने पर मैं उसे समाज की जानकारी के लिए पत्रों में प्रकाशित करूंगा। धार्मिक उत्सव, जलयात्रा आदि तो आपके घराने में होते ही रहते थे। इनके घराने की महत्ता का उल्लेख स्व० पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी ने अपनी जीवन-गाथा में किया है।

शिक्षा-प्रचार के लिए आप कितने अपने प्रान्त में फैले अज्ञान को दूर करने के लिए तथा चिन्तित रहते थे, इसका अनुमान पाठक इतने से ही लगा सकेंगे कि आपकी कपड़ा दुकान पर काम करने के उद्देश्य से (हिन्दी मिडिल पास कर)

आये हुए विद्याहित और धर्मप्रेमी पं० घनश्यामदासजीको संस्कृतकी उच्च शिक्षा
दिलाने के लिए आपने उन्हें काशी, बनारस और मोरेना भेजा, और लगभग ७-८ वर्ष तक
उनका व उनके परिवारका सारा खर्च स्वयं वहन किया। पं० घनश्यामदासजी दि० जैन समाज
के सर्वप्रथम न्यायतीर्थ हैं और सर हुकमचंद दि० जैन महाविद्यालय इंदौरके सर्वप्रथम
प्रधानाध्यापक होनेका सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ था। आप बहुत स्पष्ट वक्ता
और मनस्वी विद्वान् थे। एक बात पर सेठ सा० से नहीं पटने पर आप २ घंटे के भीतर
ही प्रधानाध्यापकी छोड़कर देश चले आये। आपके देश आने की खबर जैसे ही
सेठ लक्ष्मीचन्दजी को मिली, उन्होंने तुरन्त ही पंडितजी को [illegible]
बुलाया, उनकी मनस्विता और निर्भीकता के लिए उन्हें बधाई दी और तत्काल
में संस्कृत पाठशाला की स्थापना का भाव प्रकट किया। फल स्वरूप वि० सं०
१९७४ के वैशाख सुदी २ को, श्री महावीर दि० जैन पाठशाला का उद्घाटन
सम्पन्न हुआ। उद्घाटन-मुहूर्त के समय गांव के ४-५ ही विद्यार्थी थे और सेठजी पाठशाला
को बड़े पैमाने पर चलाना चाहते थे, इसलिए आस पास के गांवों में उन्होंने तुरन्त
आदमी भेजकर सूचना भिजवाई कि जो भी जैन भाई अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देना चाहें,
हमारी संस्था में भेजें। उनके खाने-पीने की व्यवस्था संस्था की ओर से होगी और
कोई फीस नहीं ली जायगी। बस, फिर क्या था, १०-१२ दिन में ही छात्रों की
संख्या २५ होगई। एक व्यवस्थित छात्रावास और भोजनालय की व्यवस्था
कर दी गई और साथ ही व्याकरण-साहित्य की पढ़ाई के लिए एक
वैयाकरण और हिन्दी-गणित-अंग्रेजी पढ़ाने के लिए एक अंग्रेजी मास्टर
की भी नियुक्ति हो गई। इस प्रकार छोटी सी पाठशाला ने एक वर्ष के
भीतर ही संस्कृत विद्यालय का रूप धारण कर लिया।

पाठशाला का प्रारम्भ मन्दिर के एक पुराने ढंग के बने हुए मकान में हुआ
था, अतः आपने संस्था के योग्य एक विशाल भवन गांव के कोलाहल से दूर
अपने बगीचे में बनवाने का निश्चय किया। उस समय के प्रख्यात प्रतिष्ठाचार्य स्व०
पं० मोतीलालजी वर्णी को बुलाकर बगीचे के प्रवेशद्वार पर ही भवन का खात-
मुहूर्त किया गया। सर्वप्रथम स्वयं सेठजी ने, फिर अध्यापकों ने और तत्पश्चात् सब छात्रों ने
मिट्टी खोदने के लिए दो दो हाथ मारे। नींव खुद जाने पर शिलान्यास-
का मुहूर्त भी उन्हीं वर्णीजी ने सेठजी के हाथ से कराया और बहुत शीघ्र चूना
मिट्टी से पक्की नींव भर कर तैयार की होगई। वर्षाकाल आजाने से नींव को और
भी पुख्ता होने के ख्याल से चिनाई का काम बन्द कर दिया गया। दिवाली बाद
जब भवन-निर्माण का कार्य प्रारम्भ होने को था, कि तभी हमारे प्रान्त में उस
समय के प्रसिद्ध डाकू कुंजरसिंह, धीरजसिंह का आतंक फैल गया। भवन-निर्माण का कार्य कुछ समय के
लिए स्थगित कर दिया गया और गांव में ही अपने मकान के सामने अपने ही दूसरे मकान
पर दूसरी मंजिल बनवाकर पाठशाला को उसमें स्थानान्तरित कर दिया और

यह निश्चय किया गया कि छात्रोंका आतंक समाप्त होनेपर बगीचेमें विशाल भवन तैयार कर दिया जायगा। (इसी बीच) (बीमार होनेपर किसी ज्योतिषीसे) सेठजी को अपनी अल्पायु होनेका कुछ आभास हुआ और सन १९२० में ही उन्होंने अपनी जमींदारी का बहुभाग और ललितपुर के दूकान पाठशाला को ट्रस्ट कर समर्पण कर दिये।

सेठजी का पाठशाला के छात्रों के प्रति इतना अगाध स्नेह था कि बगीचे से आनेवाले फल और शाक प्रतिदिन पाठशालामें भिजवाते। आमोंके मौसम में सब अध्यापकों और छात्रोंको साथ लेकर स्वयं बगीचे जाते, पके आमों के टोकनेके टोकने माली लाकर सबके बीचमें रखता और जितने जितने आम खाये जाते-खाता। अमरूद की फसल पर इसी प्रकार अमरूद खानेको मिलते। जुंवार, गेहूँ और चनों की फसल पर उनका ताजा होला सबको खिलाते और सबके साथ बैठकर स्वयं लेते और अपार आनन्द का अनुभव करते। रक्षाबन्धन, दीपावली, संक्रान्ति और होली आदि सभी पर्वों पर सेठजी के यहां ही सब छात्रों और अध्यापकोंका निमंत्रण होता, सबको एक उच्च आसन और थाल लगाये जाते, नये नये ताजे मिष्ठान्न और पकवान खिलाये जाते। भोजनके समय सदा ही अपनी सेठानीजीको सम्बोधित करते हुए कहा करते देखो- एक पूत होता, दो होते; इधर बुलाते, उधर जाता। ये कितने अच्छे एकसे बढ़कर एक लड़के हैं, हर कामर्मे पहिले भगवानका नाम लेते हैं, आपसमें कभी लड़ते-झगड़ते नहीं, संस्कृत और धर्मकी ऊंची पढ़ाई पढ़ते हैं, इन्हें अपना ही पुत्र मानो और खूब प्रेमसे बढ़िया माल खिलाओ। इस प्रकार सेठानीजीको सम्बोधित कर उनके सन्तान न होनेके दुःखको दूर करते और लड़कों को अपने सगे पुत्रोंके समान अति प्यार से रखते।

सेठजी की भावना यह थी कि हम आगामी वर्षों के छात्र एम.ए. और आचार्य बनकर समाजके सामने आवें। पर हम लोगोंका दुर्भाग्य था कि जब हम लोगोंने मध्यमा और विशारद पास किया, तभी सावन सुदी ३ सन १९२१ के दिन उनका सहसा स्वर्गवास हो गया। उस समय उनकी आयु केवल ४० वर्ष की थी। हम लोग तीन-तेरह हो गये, सच्चा जैसा सेठजी हमें अपने सामने, जैसा बना हुआ देखना चाहते थे — न देख सके, और न हम लोग वैसे बन सके।

संस्कृत की संस्था को स्थापित हुए यह ६० वें वर्ष चल रहे हैं। आगामी वैशाख सुदी २ सं० २०२४ को पूरे ६० वर्ष हो जायेंगे। पाठशाला के संचालकोंका कर्तव्य है, कि वे श्रीमान सेठ लक्ष्मीचन्द्रजीकी स्वर्गारोहण तिथि पर उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें और उनकी संस्थाके हीरक-जयन्ती समारोह मनानेका कार्यक्रम निश्चित करें।

इस अवसर पर मैं संस्थाके समस्त स्नातकोंसे भी निवेदन करूंगा कि वे लोग हीरक-जयन्ती मनानेके लिए संस्थाके संचालकोंको प्रोत्साहन देकर और [illegible] हीरकजयन्ती मनानेमें [illegible] को प्रेरित करें। [illegible] आगामी वर्ष इसका [illegible] भी [illegible] था - [illegible] मगर मेरे [illegible] [illegible] नहीं किया जा सका। और मेरे [illegible] [illegible] के [illegible] इस ओर [illegible] [illegible] देकर हीरकजयन्ती मनानेका [illegible] प्रदान करें। [illegible] नहीं है। [illegible] समय थोड़ा रह गया है और कार्य अधिक है, इसलिए [illegible] स्नातक [illegible]। निश्चित समय पर मीटिंग भी नहीं करते हैं। हीरक-जयन्ती मनाने, स्नातक-कोष संग्रह करने और एक स्मारिका पत्रिका निकालनेके लिए वार्षिक बैठक में कुछ प्रस्ताव [illegible] हुए हैं। मैंने [illegible] संस्थाके मंत्री [illegible] जीको भेजे, तो उनका पत्र आया कि बिना [illegible] सब सदस्योंको सूचना दिए ही २९ जूनको मीटिंग करली गई है। मैं स्वयं संस्थाका ट्रस्टी और आधि [illegible] हूं, मगर मेरे पास तक भी सूचना नहीं आई, इससे अधिक धांधली और क्या हो सकती है। वार्षिक मीटिंग - जिसमें संस्थाका बजट पास होता है, संस्थाकी उन्नति, अध्यापकोंकी नियुक्ति आदि पर विचार होता है, वह इस प्रकार प्रमुख सदस्यों तक को सूचना दिये बगैर करलेना मनमानी कार्यवाहीका एक नमूना है।

मैं संस्थाके प्रधान स्नातक सर्वश्री पं० फूलचन्द्रजी सिद्धान्त-शास्त्री, पं० दरबारीलालजी कोठिया न्यायाचार्य एम.ए., पं० खुशालचन्द्रजी गोरावाला एम.ए. साहित्याचार्य, पं० अमृतलालजी दर्शन-साहित्याचार्य बनारस, [illegible] [illegible] पं० कैलाशचन्द्रजी [illegible] ललितपुर, पं० किशोरीलालजी [illegible], पं० [illegible] प्रतिष्ठाचार्य [illegible], पं० [illegible] [illegible], पं० [illegible] शास्त्री [illegible], पं० गोपालदासजी शास्त्री [illegible], आदि से निवेदन करूंगा कि वे अपनी ऋषि जननी स्वरूपा माताके - जिसका कि उन्होंने ज्ञानामृत पान किया है - हीरक-जयन्ती मनानेके लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करें और स्वर्गीय संस्थापकजीकी भावनाओंको मूर्त रूप देनेके लिए आगे आवें। संस्थापकजीके लिए यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी और स्वर्गस्थ संस्थापकजीकी आत्मा भी अपने अधूरे रह गये स्वप्नोंको साक्षात्कार होते देखकर आनन्दसे प्रफुल्लित होगी। आशा है - पाठशालाके समस्त स्नातक - जिनकी कि संख्या ५०० से भी ऊपर है, जहां भी हों वो, अपने वर्तमान निवास, कार्य-विवरण आदिके साथ अपने अपने पते ठिकाने संस्थाको भेजेंगे।

— ० —